विराटनगर/बैराठ का ऐतिहासिक परिचय

''विराटनगर'' अरावली की सुरम्य पहाडियों के बीच में बसा हुआ पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्थल है। महाभारत के विराटपर्व के अनुसार पाण्डवों ने यहां एक वर्ष का अज्ञातवास बिताया था। अज्ञातवास के दौरान पाण्डव यहा छद्म नामों से जाने जाते थे। जैसे युधिष्ठर 'कंक', अर्जुन 'वृहन्ला', भीम 'वल्लभ रसोईया', द्रोपदी 'सेरन्ध्री'।

राजा विराट ने पाण्डवों की स्वामी भक्ति एवं वीरता से प्रभावित होकर अपनी पुत्री उतरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से किया था। महाभारत कालीन भग्नावशेष आज भी यहां बिखरे पडे है।

ऐतिहासिक काल में 'मत्स्य महाजनपद की राजधानी 'विराटनगर' रही थी। विराटनगर आरंभ से आध्यात्मिक नगरी के साथ–साथ व्यापार– वाणिज्य का भी प्रधान केन्द्र रही। चूंकि 'मत्स्य महाजनपद' शूरसेन, अवन्ती एवं कुरू के निकट स्थित था। इसलिए इसका सामरिक दृष्टि से भी बहुत महत्व रहा।

'विराटनगर' सम्राट अशोक का राजस्थान में महत्वपूर्ण केन्द्र रहा जिसकी यहां से प्राप्त विभिन्न अभिलेखों से पुष्टि होती हैं।

भाब्रू लघु शिलालेख से यह ज्ञात होता है कि अशोक मगध का राजा था। इस समय यहां बौद्ध–धर्म का बोलबाला था। अशोक बौद्ध–धर्म का अनुयायी रहा इसकी पुष्टि भी उक्त अभिलेख से होती हैं। अशोक के समय विराटनगर में शिक्षा की पहुंच आमजन तक थी। इतिहासकार स्मिथ ने इस बात की पुष्टि की है।

1936 में विराटनगर/बैराठ से दयाराम साहनी ने बौद्ध–स्तूप को खोज निकाला। यह राजस्थान का प्राचीनतम स्तूप हैं। बैराठ अपनी शैलचित्र कला के लिए भी प्रसिद्ध है।

वस्तुतः बैराठ अपनी उत्कृष्ट संस्कृति के लिए विख्यात रहा हैं। 7वीं शती में चीनी यात्री हुएनसांग ने यहां की यात्रा कर उक्त ऐतिहासिक नगरी की बहुत प्रशंसा की हैं। यहां ऐतिहासिक अनुसंधान की बहुत संभावनाए हैं।